माले गनीमत को अपनी मिल्कीयत न समझे



हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

जब इस्लामी उसूल के मुताबिक जिहाद का सिलसिला जारी हो और दुश्मन के मुकाब्ले मे कामयाबी हो और उसके बाद दुश्मनो का जो माल हासिल हूवा करता है वो माले गनीमत करार दिया जाता है और उसको बैतुल माल मे जमा कर दिया जाता है. चुनान्चे जो माल इजतेमायी तौर पर मुसलमानो की मिलकत हूवा करता है ये भी इसीका हुकम रखता है.

माले गनीमत जब ज़ाती मिलकत की तरह हो जाये यानी ऐसे अमवाल जो लोगो के खर्च के लिये दिये गये है हुकमरान के पास बैतुल माल का खर्चा रखा हूवा है और उसपर वो कंट्रोल किये हुवे है पूरी पब्लिक का माल है लेकिन वो उसको ज़ाती माल के तौर पर इस्तेमाल करना शुरू कर देगा इसी तरह मस्जीदो और मदरसो के माल और इसी तरह गांव के इजतेमायी कामो के लिये जमा किया हूवा माल जो ज़िम्मेदारो के पास रखा जाता है उन सबका

यही हुकम है वो बडी ज़िम्मेदारी की चीझ है और आदमी को इससे बहुत ज़्यादा बचने की ज़रूरत है अपने आपको इससे बहुत ज़्यादा बचाये.



हजरत अबू बकर (रदी) की अमानत का नमूना

किताबो मे लिखा है के ऍक मरतबा उनके घर वालो ने दरख्वास्त की के ये जो हमे वज़ीफा मिलता है उसमे तो बडी मुश्कील के साथ गुज़रान हो जाता है बच्चो की ख्वाहिश है के कोयी मीठी चीझ पका कर खायी जाये तो हजरत अबू बकर (रदी) ने कहा के मेरा तो यही वज़ीफा है और मेरे पास उसकी कोयी गुन्जाईश नही है अगर बच्चो को मीठा खाने का शोक है तो ये जो वज़ीफा मिलता है उसी मेसे कुछ बचत करके तुम उसका इन्तेज़ाम कर सकती हो चुनान्चे उन्होने जब देखा के ये अलग से कोयी रकम नही करेन्गे तो उन्होने बडी मुश्कील से बचत करना शुरू किया और थोडा थोडा करके बचा कर उससे मीठा बना लिया और हजरत अबू बकर (रदी) के सामने भी पेश किया तो उन्होने पूछा के ये कहा से आया? तो उन्होने बताया के मे इस तरह रोझाना बचाती थी और उसी बचत से ये मीठा पकाया है तो हजरत अबू बकर (रदी) ने फरमाया के मालूम होता है के इस कदर कम रकम से भी हमारा गुज़ारा हो सकता है तो आपने कहा के बैतुल माल से मिलने वाले वज़ीफे से



इस कदर रकम कम करदी जाये.

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह) का ऍहतेयात

हजरत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह) के मुताल्लीक लिखा है के ऍक साहब उनसे मिलने के लिये गये हजरत कुछ हिसाब किताब लिख रहे थे जब हिसाब किताब से फारिग हो गये तो रात का वकत था फिर भी चिराग बुजा दिया और दूसरा चिराग रोशन किया उन साहब ने पूछा आपने ऐसा क्यू किया? फरमाया मे सरकारी हिसाब किताब लिख रहा था और ये चिराग जो जल रहा था उसमे तेल बैतुल माल का था जब वो काम खतम हो गया तो मेने सरकारी चिराग बुजा दिया और अब हम दोस्ताना गुफतेगु करने जा रहे है इसलीये अब उस चिराग को जलाने की मेरे लिये इजाज़त नही है और ये दूसरा चिराग जो जलाया उसमे मेरा खूद का तैल है.

हमे इससे बहुत ज़्यादा बचने की ज़रूरत है आज कल इसमे बडी बे-ऍहतेयाती होती जा रही है ये सब इसी वइद मे दाखिल हो जायेगा.